महिला उद्यमियों की ग्रामीण विकास में भूमिका

मुकेश कुमार
व्याख्याता अर्थशास्त्र
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय अलवर (राज.)

शोध सारांश - आज भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में महिला पुरुषों के साथ मिलकर उन सभी कार्यों को करने को तैयार है जिनसे उनका विकास, ग्रामीण विकास तथा देश का विकास होता है। महिला उद्यमी द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। वह अपने परिवार के आर्थिक स्वावलम्बन बनाने में गृहणी के साथ-साथ व्यवसाय भी कर रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में महिला उद्यमियों के लिए स्थिति अभी भी अपेक्षानुकुल नहीं है। इसके बावजूद ग्रामीण विकास में महिलाएं ग्रामीण उद्यमिता के क्षेत्र में अनेक चुनौतिपूर्ण एवं उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं। स्त्रियां अनेक विषम परिस्थितियों तथा कठिन चुनौतियों का सामना करके अपने उद्यमों द्वारा न केवल अपने परिवार के आर्थिक स्वावलम्बन में सहयोगी बनी हैं वरन् ग्रामीण विकास में भी योगदान दे रही है। महिला उद्यमी ग्रामीण तथा देश **के** विकास की धुरी बन गई है।

शब्दकुंजी - उद्यमी, ग्रामीण विकास, व्यावसाय ।

प्रस्तावना - भारत एक ग्रामीण परिवेश वाला देश है। यहां की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। वर्ष 2011 **की** जनगणना के अनुसार भारत की कुल 68.84 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का कथन है कि 'भारत गांवों का देश है और इसकी आत्मा गांवों में बसती है।' भारत **में** 2011 की जनगणना के अनुसार 450 करोड़ महिलाएं गांवों में निवास करती हैं। अत: स्पष्ट है ग्रामीण विकास **से** ही देश का विकास संभव है। ग्रामीण विकास में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि- 'यदि आपको विकास करना है तो महिलाओं का उत्थान करना होगा।' महिलाओं के उत्थान से समाज का विकास होगा तथा समाज से राज्य और राज्य से राष्ट्र का विकास होगा।

भारत में प्राचीनकाल से सम्पूर्ण राष्ट्रीय जीवन की ईकाई इसके गांवों में ही केन्द्रीत रही है। ग्रामीण विकास की प्राचीन समय में विशेष ध्यान नहीं दिया गया था किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात से भारत में ग्रामीण विकास पर विशेष जोर दिया गया, परिणामस्वरूप आज भारत विशेष विश्व के अन्य देशों के साथ प्रतिस्पर्धा में डटकर मुकाबला कर पा रहा है। भारत के आर्थिक विकास में ग्रामीण लोगों का महत्वपूर्ण योगदान है। कहा भी गया है कि आज की समृद्धि का रास्ता ग्रामों की समृद्धि में निहित है। तथा ग्रामों के आर्थिक विकास को प्रभावित करने में महिला उद्यमी की महत्वपूर्ण भूमिका है।

भारत के आर्थिक विकास में ग्रामीण लोगों का महत्वपूर्ण योगदान होता है तथा ग्रामीण विकास में महिलाओं की भूमिका अतिमहत्वपूर्ण होती है। इस प्रकार महिला उद्यमी को आर्थिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत माना गया है। महिला उद्यमी अपने **लिए** और अन्य लोगों के लिए नये कार्य सृजित करती है और समाज को प्रबंधन, संगठन एवं व्यवसाय समस्याओं के भिन्न- भिन्न समाधान उपलब्ध कराती है। किन्तु फिर **भी** उद्यमियों में उनकी संख्या कम है। महिला उद्यमी परिवार एवं समुदायों की आर्थिक सम्पन्नता, गरीबी, उन्मूलन और महिला सशक्तिकरण में विशेष रूप से अत्यंत सहयोग दे सकती है।

उद्देश्य –

1. ग्रामीण विकास में महिला उद्यमी के योगदान का अध्ययन करना ।
2. महिला उद्यमियों की स्थिति का अध्ययन।
3. महिला उद्यमियों की समस्याओं का अध्ययन।
4. देश के विकास में महिला उद्यमियों की भूमिका का अध्ययन करना ।
5. महिला उद्यमियों से संबंधित उद्यमों का अध्ययन।
6. महिला उद्यमियों की विशेषतओं का अध्ययन करना ।

अध्ययन की विधि - प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक संमक पर आधारित है। महिला उद्यमियों की ग्रामीण विकास में योगदान के अध्ययन हेतु साहित्य संदर्भित पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाओं, विभाग की वेबसाईट, प्रकाशित लेखों, ग्रंथों आदि से संकलित कर प्रस्तुत शोध को धरातल पर पृष्ठांकित करने का प्रयास किया गया है।

भारत में महिला उद्यमी की स्थिति - आधुनिक भारत में महिलाओं की भूमिका एक मां और ग्रहणी के रुप में पारम्परिक भूमिका तक ही सीमित नहीं है यह है परिवर्तन की ओर से गुजर रहा है। महिलाएं साक्षर हो रही हैं और घर से बाहर निकलने लगी हैं तथा बेरोजगार रहने के बजाय पुरुषों के साथ आमदनी में वृद्धि करने हेतु व्यवसाय प्रारंभ कर दिया है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्राचीनकाल से महिलाएं दबी हुई सी रही है। किन्तु आज वहां आमूलचूल परिवर्तन हो चुका है। इस महंगाई के युग में, कृषि पदार्थों की कम कीमत प्राकृतिक आपदाओं, बाढ, सूखा आदि के कारण ग्रामीण लोगों के जीवन बसर में कठिनाईयां होने लगी, जिसके कारण उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है। उक्त समस्याओं को सुलझाने के लिए महिलाएं सरकारी नौकरी, स्वयं का व्यवसाय, मजदूरी तथा अन्य कार्यों में खुलकर सहयोग करने लगी हैं। आज ग्रामीण परिवेष बदल चुका है। वर्तमान में प्रत्येक गांव की महिलाएं गृहिणी व खेती के साथ-साथ स्वयं सहायता समूह के माध्यम से अन्य कार्य आसानी से कर रही है। जिससे उनकी आय में वृद्धि होने लगी **है।** एक अध्ययन के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं जो परिवार का प्रमुख आधार बन रही है, जिनका 70 प्रतिशत महिलाएं नौकरी या खुद का व्यवसाय या मजदुरी कर रही हैं।

भारत में वर्तमान में शहरी एवं ग्रामीण विकास में महिला उद्यमी पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चलने को तैयार है। दुनिया एवं देश के विकास में महिलाएं उन क्षेत्रों में भी बढ़चढकर योगदान दे रही हैं। जहां केवल पुरुषों का वर्चस्व माना जाता था। आज महिला उद्यमी हर व्यवसाय को मुनाफे में बदलकर विकास में अपना योगदान **दे रही** है। कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिला उद्यमी की स्थिति अनुकूल नहीं है। महिलाओं को व्यावसाय में जाने के लिए पुरुषों द्वारा बंदिश लगाई जाती है।

इस प्रकार महिलाओं ने अपने परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार करने हेतु पुरुषों का हर कार्य करने लगी है। इस कार्य में उनकी स्थिति अभी भी अपेक्षानुकूल नहीं है। इसके बावजूद भी ग्रामीण विकास में महिलाएं ग्रामीण उद्यमिता के क्षेत्र में अनेक चुनौतिपूर्ण एवं उल्लेखनीय कार्य कर रही है। महिलाएं कई विषम परिस्थितियों में भी कठिन चुनौतियों का सामना करते हुए अपने उद्यमों द्वारा न केवल अपने परिवार के आर्थिक स्वावलम्बन में सहयोगी बनी है, बल्कि ग्रामीण विकास में भी योगदान दे रही है।

एक आम धारणा है कि भारत में महिलाओं को विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक रूप से गैर उत्पादक माना जाता है वे आर्थिक गतिविधियों में सहयोग नहीं कर पाती है। किंतु आज परिस्थिति बदल गई है। महिलाएं सामना करने के लिए उंची डिग्रियां प्राप्त कर रही हैं। जरूरत के साथ ट्रेनिंग कोर्स, डिजाईनर, आंतरिक सज्जाकार, निर्यातकों, परिधान निर्माण कृषि कार्य आदि में नये तलाश रही है। जिस कारण राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इनकी मांग बढने लगी है। परिणामस्वरूप देश के ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं जटिल समस्या व चुनौतिपूर्ण कार्य करते हुए आगे बढ रही है। आज ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं हर व्यवसाय में कार्य करने के लिए तत्पर है।

प्रस्तुत शोध पत्र में कुछ नए प्रमुख उद्यमों का उल्लेख किया जा रहा है जो ग्रामीण विकास में महिला उद्यमियों के योगदान को तारांकित करते हैं।

1. **कृषि उद्यम** - भारत में लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है और जिनमें आधी जनसंख्या महिलाओं की है। ये महिलाएं कृषि कार्यो में पूरी मेहनत से योगदान करती है। कृषि कार्य बिना महिला के संभव नहीं है।
2. **पशुपालन** - भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुपालन को रीढ की हड्डी मानी गई है। महिलाएं कृषि कार्यो के साथ पशुपालन का कार्य आसानी से कर रही है। जिससे एक और कृषि कार्यो के लिए पशु तथा खाद प्राप्त हो रहे है वहीं महिला उद्यमी दूध, दही, घी के साथ गोबर के कण्डे बनाकर व्यवसाय कर रही है।
3. लघु एवं **कुटीर** उद्योग - आज देश भर में लघु एवं कुटीर उद्योगों में महिला उद्यमियों की संख्या अधिक है। वर्तमान में इन उद्यमों में महिला ईकाई संस्थाओं की संख्या करीब 11 लाख है।
4. **वानिकी उद्यम** - वानिकी उद्यम में महिलाएं चाय, रबर, लाख, रेशम, फल, जडी-बुटी, तेन्दुपत्ता, महुआ, बैर, वनोपज के संग्रहण आदि कार्य कर विकास में योगदान दे रही है।
5. **हस्त शिल्प उद्यम** - महिला उद्यमी हस्त शिल्प एवं कला के क्षेत्र में माहिर होती है। इस
6. द्यमों में अनेक कठिनाईयां एवं चुनौति होने पर भी महिलाएं अपना कार्य साहस से कर रही है।

उक्त उद्यमों के अलावा महिलाऐं, आर्थिक स्वालम्बन की दृष्टि से अपने गृहकार्य के अतिरिक्त शेष समय **में अगरबत्ती** व बीडी, सिलाई कढाई, कालीन जरी, बुनाई, कुम्हारी, बांस की टोकरी, सूपे, मसाले, अचार, पापड, चिप्स, झाडू**,** नमकीन आदि निर्माण के कार्य पूर्वकालिक व्यवसाय के रूप में भी कर रही है।

महिला उद्यमियों की राह- वर्तमान में महिला उद्यमियों की राह में कई कठिनाईयां व चुनौतियां है किन्तु फिर भी महिलाऐं अपना कार्य सफलतापूर्वक कर रही है।

'हाल ही भारत दौरे पर आई संयुक्त राष्ट्र महिला संगठन की कार्यकारी निदेशक फुम्जिले मलाम्बे नकुका का कहना था कि लैंगिक समानता के मामले में भारत दुनिया का नेतृत्व करने की क्षमता है। पिछले दिनों में जारी 'वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम' की ग्लोबल जेंडर सर्वेक्षण रिपोर्ट 2014 के अनुसार भारतीय महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में कोई खास बदलाव नहीं आया है। दुनिया के 1421 देशों में लैंगिक असमानता के मामले में भारत का स्थान 114 पर है। रिपोर्ट के अनुसार भारतीय महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ, सेवाओं और कारोबार में मामले में दुनिया में बसे ज्यादा सामाजिक विषमता का दंश झेलना पडता है। भारत में महिला उद्यमियों की संख्या निरंतर घटती जा रही है।

'नेशनल कौंसिल ऑफ अप्लाइड इकॉनामिक्स रिसर्च (एनसीएईआर) द्वारा भारतीय मानक विकास सर्वेक्षण की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2004- 05 से 2011-12 के दौरान नौकर की और कारोबारी के मामले में महिलाओं की स्थिति में कोई खास सुधार नहीं हो पाया है। वर्ष 2005 में ग्रामीण क्षेत्रों में करीब 60 प्रतिशत महिलाऐं कार्य करके अपने परिवार के लिए रोजी रोटी जुटाने में सहयोग करती थी जो वर्ष 2012-13 में घटकर करीब 10 प्रतिशत रह गई व आमतौर पर भारत के पुरुषों की कामयाबी का अधिकांश श्रेय महिलाओं को यह कहकर दिया जाता है कि हर पुरुष की कामयाबी के पीछे महिला का हाथ होता है। इतना ही नहीं हमारे पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को घर की लक्ष्मी माना जाता है पर विडम्बना देखिए कि इसी समाज में इन लक्ष्मियों को लक्ष्मी यानी रुपया पैसा अर्जित करने के लिए पुरुषवादी हथकंडे अपनाए जाते रहे हैं।

महिला उद्यमियों की समस्याएं - भारत में महिला उद्यामियों की कुछ समस्या निम्नवत् हैं

1. बच्चों एवं बुजुर्गों तथा गृहकार्य की जिम्मेदारी होने के कारण व्यवसाय के लिए समय का अभाव।
2. ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं का अशिक्षित, अंधविश्वासी व कुरीतियों से घिरी होने के कारण व्यवसाय नहीं चला पाती है।

3. पारिवारिक एवं सामाजिक कार्यों में संलग्नता के कारण व्यवसाय चलाने में कठिनाईयां |

4. परिवार तथा कारोबार में बीच सामंजस्य बनाने में कठिनाई ।

5. अधिकांश महिलाओं के शर्मीले स्वभाव होने के कारण।

6. वित्तीय संस्थाओं द्वारा ऋण देने में आनाकानी तथा ऋण हेतु अनावश्यक चक्कर लगवाना ।

7. पुरुष प्रधान समाज में अपना अस्तित्व अनाने में कठिनाई ।

8. व्यापार तथा व्यवसाय एवं उद्योगों जैसे जटिल कार्यों में महिलाऐं आमतौर पर दूसरे व्यक्ति पर निर्भर रहती है।

9. सौदेबाजी तथा व्यापारिक प्रक्रिया में महिलाऐं प्राय: पुरुष की तुलना में कम निपुण मानी जाती है।

10. वित्तीय लेखांकन में कमजोर।

महिला उद्यमियों के उन्नयन हेतु उपाय- भारत में ग्रामीण क्षेत्रों की महिला उद्यमियों की समस्या एवं चुनौतियों से निपटने तथा व्यवसाय हेतु प्रेरित करने के लिए निम्न उपाय किए जा सकते हैं –

- बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं द्वारा ग्रामीण महिला उद्यमियों को आसानी से ऋण सुलभ कराया जाए।
- ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा तथा आधारभूत सुविधाओं का व्यापक विस्तार किया जाना चाहिए।
- ग्रामीण क्षेत्रों में अंधविश्वास एवं कुरीतियों के विरुद्ध, जागरुकता पैदा करने वाले कार्यक्रम अधिक से अधिक चलाएं जाएं।
- व्यापार तथा उद्योगों जैसे जटिल कार्यों को करने के लिए महिलाओं को प्रशिक्षित किया जाए।
- वित्तीय लेखांकन संबंधी कार्यों में साहसी बनाया जाए।
- बच्चों तथा बुजुर्गों की देखभाल में पुरुषों का भी सहयोग हो ।
- शासन द्वारा महिला उद्यमियों के प्रोत्साहन व संरक्षण देने की योजनाओं का कानूनों पर कारगर अमल किया जाना चाहिए।
- महिला उद्यमी हेतु सुरक्षा के उपाय शासन स्तर से होना चाहिए।
- लघु एवं कुटीर उद्योगों हेतु मूलभूत संरचना व सहायता उपलब्ध करायी जावे।
- प्रत्येक ग्रामों में महिला उद्यमी मार्गदर्शन प्रकोष्ठों की स्थापना की जावे।
- उत्कृष्ट निष्पादन करने वाली महिला उद्यमी को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- आर्थिक विकास के सभी क्षेत्रों एवं योजनाओं में महिला उद्यमियों की सहभागिता सुनिश्चित की जावे ।
- महिला उद्यमियों द्वारा निर्मित वस्तुओं का क्रय विक्रय शासन स्तर से होना चाहिए।
- महिला उद्यमियों को व्यवासाय हेतु ऋण स्वीकृति में देरी नहीं करनी चाहिए।

निष्कर्ष - भारत में ग्रामीण क्षेत्रों के विकास से ही सम्पूर्ण विकास को आगे बढाया जा सकता है। आज भारत में महिला पुरुषों के साथ बराबर हर कार्य कराने को तत्पर है। पुरुषों द्वारा महिलाओं को व्यवसाय तथा अन्य कार्य निष्पादित करने की आजादी देने की आवश्यकता है। आज देश में महिलाऐं लघु एवं कुटीर उद्योग के माध्यम से तथा फेरी लगाकर भी अपना व्यवसाय कर पारिवारिक जीवन को कुशल बना रही है। महिलाओं एवं पुरुषों की प्रतिस्पर्धात्मक भागीदारी के द्वारा नहीं बल्कि पूरक सहभागिता द्वारा ही ग्रामीण विकास को दृढतर किया जा सकता है। पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि 'यदि आपको विकास करना है तो महिलाओं का उत्थान करना होगा। महिला का विकास होने पर समाज का विकास स्वत: हो जायेगा।'

अंत में कहा जा सकता है कि नारी शक्ति की विकास का अधार स्तम्भ है। सर्वमान्य सत्य सिद्ध हो चुका है कि सफल पुरुष की कामयाबी में महिला का हाथ होता है। आज इस महंगाई के युग में अकेले कमाने वाले व्यक्ति से अच्छे जीवन की

कल्पना नहीं की जा सकती है। महिलाओं को घर की जिम्मेदारी के साथ अन्य कार्यों में संलग्नता आवश्यक है। महिला उद्यमियों की छोटी- छोटी समस्याओं का समाधान कर दिया जाए तो महिला उद्यमियों द्वारा उत्कृष्ट निष्पादन प्राप्त कर सकते हैं। जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों की जीवनशैली में आमूलचूल परिवर्तन होगा तथा ग्रामीण विकास के साथ देश का विकास भी होने लगेगा।

संदर्भ ग्रंथ **सूची** :-

1. भाटिया अंजू (2000) महिला विकास और गैर सरकारी संगठन रावत प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. भारतीय कोलन और इंदिरा पारीख (अगस्त 2005) भारतीय महिलाओं का एक प्रतिबिम्ब उद्यमशीलता की दुनिया भारतीय प्रबंधन संस्थान वर्किंग पेपर नं. 2005/08/07
3. ललीता एन (2005) सूक्ष्म वित्त ग्रामीण विकास, गांधी ग्रामीण संस्थान, गांधी ग्राम डिन्डीगत, तमिलनाडू।
4. रामनरेश ठाकुर (2009), भारत में ग्रामीण महिला सशक्तिकरण, कनिष्टक प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. डॉ गर्ग डी पी (1986), समन्वित ग्रामीण विकास एवं सहकारिता शिव प्रकाशन, इन्दौर |
6. दत्त एवं सुन्दरम (2011) भारतीय अर्थव्यवस्था अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
7. योजना पत्रिका (2014) प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली।
8. कुरुक्षेत्र पत्रिका (2014) प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली।